त्रिधा लीला

—श्रीमती रानी भगत, कानपुर.

पृथ्वी पर जब–२ पाप बढ़ जाते हैं और भक्तों पर अत्याचार होने लगते हैं उन अत्याचारों को दूर करने के लिए इस क्षर ब्रह्माण्ड के मालिक विष्णु भगवान को अवतार धारण करना पड़ता है। द्वापर युग में कंस के अत्याचारों से जब प्रजा दुखी हो उठी तो उनके दुःखों को दूर करने के लिए विष्णु भगवान ने देवकी के गर्भ से भादों मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मथुरा के कारागृह में जन्म लिया और अपने चतुर्भुजी स्वरूप से वसुदेव–देवकी को दर्शन देकर पूर्व जन्म के वरदान को पूरा किया और कहा इस बालक को ले जाकर नन्द के घर यशोदा के पास पहुंचा दो और वहां से कन्या ले आओ। इस समय विष्णु भगवान ने सिर्फ पृथ्वी के कष्टों को दूर करने के लिए ही नही बल्कि अपने इष्ट देव के लिए भी यह तन धारण किया। उनके इष्ट देव गौलोक से और उससे भी परे अक्षर धाम से अक्षर की चितवृती ओर परम धाम से पूर्ण पारब्रह्म का आवेश सभी ने आकर इस तन पर बैठ कर अपने–२ कार्यों को करना था। बिना कारण कोई कार्य नहीं होता इसलिए इन तीनों धामों में बैकुण्ठ, गौलोक और परम धाम में भी कारण बने।

परमधाम में अक्षरातीत का अपनी ब्रह्म प्रियाओं के साथ प्रेम सम्वाद में अक्षर का खेल दिखाना और अपने सत अंग अक्षर को अपनी आनंद अंग की लीलाओं का दिग्दर्शन कराना और गौ लोक में विरजा सखी का कृष्ण के साथ एकांत बिहार और श्रीदामा अथवा राधा का परस्पर विवाद श्राप आदि। बैकुण्ठ में विष्णु का लक्ष्मी को अपने इष्ट देव की महिमा बताना इत्यादि। इन्हीं सब कारणों को पूरा करने के लिए अक्षर ब्रह्म की आत्मा ने अक्षरातीत के आवेश को लेकर उस तन में प्रवेश किया। विष्णु के इस तन ने ब्रज से लेकर द्वारका तक अपनी लीलाओं को किया। परंतु अंदर बैठी हुई तीनों धाम की शक्तियों ने समय–२ पर अपना कार्य किया और उसे पूरा करके अपने धाम को वापिस चली गयीं। अंदर बैठी हुई शक्तियां किस–२ रूप में कैसे कार्य करती रहीं इस बात को कोई नहीं जान पाया जन्म से

Nijanand App

लेकर ११ वर्ष ५२ दिन तक जिस शक्ति ने कार्य किया वह परमधाम की पार ब्रह्म की शक्ति थी जो अपनी ब्रह्म प्रियाओं को यह माया के खेल दिखाने के लिए अवतरित हुई थी। जब वसुदेव बालक को लेकर नन्द के घर जाते हैं उस समय सम्पूर्ण शक्तियां उस तन में प्रवेश कर चुकी थी और ब्रह्म प्रियाओं की सुरताओं ने ब्रज में गोपियों के तनों में प्रवेश किया। नन्द के घर पुत्र उत्पन्न सुन कर ब्रजवासी खुशी से झूम उठे और नाचते गाते बधावा देते हैं। देव लोक से देवी–देवता भी दर्शन करने आते हैं और प्रसन्न होते हैं। ब्रज वधुएं भी अपने घरों से अपने प्रियतम का दर्शन करने आती हैं। पूर्ण ब्रह्म के आवेश ने विष्णु के इस तन को भी अपना नाम दे दिया। और सम्पूर्ण लीला कृष्ण नाम से की। मूल सम्बन्ध होने के कारण से गोपियों का चित सदैव कृष्ण में लगा रहता था और सारा दिन यशोदा के घर में और जमुना तट पर कृष्ण के साथ लीलायें करती थी। और वह भी अपनी बाल क्रीडाओं से उनको सुख देते थे। पूतना, अघासुर, बकासुर, तृणावृत, इन्द्र कोप आदि जितने भी कष्ट ब्रज पर आये उनको दूर करके सदैव उनकी रक्षा करते रहे। पूर्ण ब्रह्म की इस शक्ति ने ११ वर्ष ५२ दिन तक लीला की और फिर वह अपने धाम में वापिस चली गई। यह उनकी प्रथम लीला थी जो पूर्ण ब्रह्म के आवेश को लेकर सम्पन्न हुई। उनके धाम वापिस जाने के बाद यह ब्रह्माण्ड भी लय हो गया था परन्तु पुनः वैसा बन जाने के कारण कोई इस भेद को नहीं जान पाया था। अब यह ब्रह्माण्ड अक्षर की सुरता से बना और सम्पूर्ण सामग्री गौलोक की थी। कृष्ण के रूप में यह दूसरी लीला थी। जिस पर गौलोक की शक्ति ने बैठकर अपना कार्य किया। यह शक्ति ११ दिन तक रही। ७ दिन तक गोकुल में रहे और फिर अक्रूर के साथ मथुरा जाकर कंस का वध किया और वसुदेव देवकी को आकर कारागृह से मुक्त किया। तथा उग्रसेन का राज्य तिलक किया यह सब कार्य ४ दिन के अन्दर हुए थे इसके बाद ग्वालों का भेष उतारकर क्षत्रिय भेष धारण किया। जैसे ही ग्वाला भेष उतारा, गोकुल की शक्ति भी गोकुल में जाकर गुप्त रूप से गोपियों में समा गई। अब इसके बाद द्वारका पर्यन्त जितनी भी लीला हुई सब विष्णु मय कृष्ण की है। तन तो पहले ही विष्णु का था अब शक्ति भी बैकुण्ठ की अपनी सम्पूर्ण सत्ता के सहित आकर विराजमान हो गई। और उसी शक्ति ने फिर सम्पूर्ण लीला की। एक ही तन में यह सब लीला होने से कोई भी उन शक्तियों से परिचित न हो सका और कृष्ण में एक ही शक्ति का होना मानते रहे।

—०—

Nijanand App